स्कूली शिक्षा और कम्प्यूटर

यह कहा गया है और कहा जा रहा है कि कम्प्यूटर से सीखने की गति और दक्षता दोनों में सुधार होगा। इस्राइल के प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों में कम्प्यूटरों के उपयोग के असर के अध्ययन से पता चला है कि दरअसर असर उल्टा ही रहा है।

1922 में थामस एडिसन ने भविष्यवाणी की थी कि सिनेमा शिक्षा में क्रांति ला देगा। उनका मत था कि पाठ्यपुस्तकें जल्दी ही खत्म होने वाली हैं। ज़ाहिर है उनका मत गलत था। मगर तब उनकी भविष्यवाणी के आधार पर किसी ने यह कोशिश बिल्कुल नहीं की थी कि स्कूल-स्कूल में सिनेमाघर बना डाले।

मगर कम्प्यूटर की बात अलग है। जैसे ही यह बात सामने आई कि कम्प्यूटर शिक्षा में मददगार हो सकता है, कई सरकारों ने स्कूलों में कम्प्यूटर पहुंचाना शुरू कर दिया। कई जगहों पर तो स्कूलों में कम्प्यूटर ही कम्प्यूटर नज़र आएंगे। यह कहा गया और कहा जा रहा है कि कम्प्यूटर से सीखने की गति और दक्षता दोनों में सुधार होगा। इस आशय की कई रिपोर्टें भी तैयार हुई हैं।

इस संदर्भ में एम.आई.टी. के जोशुआ एंग्रिस्ट और जेरुसेलम के हिब्रू विश्वविद्यालय के विक्टर लेवी ने इस्राइल के प्राथमिक व माध्यमिक स्कूलों में कम्प्यूटरों के उपयोग के असर का अध्ययन किया है। एंग्रिस्ट और लेवी ने चौथी व नवीं कक्षा के बच्चों के गणित व हिब्रू के अंकों पर ध्यान दिया। कम्प्यूटर की मदद से सीख रहे बच्चों और अन्य विधियों से सीख रहे बच्चों के अंकों की तुलना करने पर देखा गया कि कम्प्यूटरों का असर प्राथमिक की बजाय माध्यमिक स्कूलों पर ज़्यादा हुआ है। मगर यह भी पता चला कि दोनों ही स्तरों पर कम्प्यूटरों के इस्तेमाल का कोई उल्लेखनीय असर नहीं है। दरअसर असर उल्टा ही रहा है। चौथी कक्षा के कम्प्यूटर से सीखने वाले बच्चों के प्राप्तांक कम रहे।

शोधकर्ताओं ने इसकी तीन व्याख्याएं प्रस्तुत की हैं। पहली, यह हो सकता है कि कक्षाओं में कम्प्यूटर की व्यवस्था करने के चक्कर में अन्य सुविधाओं के लिए पैसा ही न बचा हो। मगर यह बात जंचती नहीं क्योंकि इन कम्प्यूटरों के लिए पैसा एक अलग स्कीम से आया था। इसका खर्च शिक्षा विभाग के बजट से नहीं बल्कि नेशनल लॉटरी से प्राप्त धन से हुआ था।

दूसरी संभावना यह है कि शायद अभी कम्प्यूटरों का ठीक ढंग से इस्तेमाल करने में और समय लगेगा। मगर